

अंक 20
वर्ष 2015-16

ISSN-0976-5778

इसरा



हिन्दी विभाग,
DEPARTMENT OF HINDI
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
DOCTOR HARISINGH GOUR VISHWAVIDYALAYA, SAGAR -470003 (M.P.)
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय A CENTRAL UNIVERSITY)

11. 'राछरे' एक विलुप्त बुन्देली गायन	— ओमप्रकाश चौबे	84
12. बुन्देली लोकचित्रों में स्त्री	— वीणा चौबे एवं अरुणा चौबे	87
13. बुन्देलखण्ड के लोकगीत	— राजीव नामदेव	90
14. बुन्देली विवाह गीतों का लालित्य	— अभिनन्दन गोइल	92
15. बुन्देली ललित निबन्ध : "अथाई की समपूरण रात"	— अजीत श्रीवास्तव	95
16. बुन्देलखण्ड के मित्र मिश्र	— आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल	97
17. ओरछा के राजकवि 'मंजर'	— एन.डी. सोनी	100
18. शिलाओं पर अंकित राम कथा	— हरिविष्णु अवस्थी	104
19. लोकपर्व नौरता (सुआटा)	— रामकिशोरी गुप्ता	107

खण्ड-ग : इतिहास : मनुष्य की तीसरी आँख

1. हमारे तालाब जल प्रदाता ही नहीं अन्नदाता	— ओम प्रकाश तिवारी	115
2. मधुकर शाह बुन्देला और अकबर	— वीरेन्द्र बहादुर खरे	120
3. बुन्देली बाल साहित्य	— गायत्री वाजपेयी	125
4. बुन्देली की ढहती मड़ैया	— गुणसागर 'सत्यार्थी'	130
5. बुन्देलखण्ड में स्वतन्त्रता संग्राम का पहला दौर	— बहादुर सिंह परमार	133
6. मुगलकालीन बुन्देलखण्ड की अर्थव्यवस्था	— बी.के. श्रीवास्तव	146
7. 'चन्देलकाल की राज व्यवस्था'	— संदीप सबलोक	154
8. बुन्देली लोक साहित्य : जनसंचार माध्यम	— राजेन्द्र यादव	157

मुगलकालीन बुन्देलखण्ड की अर्थव्यवस्था

बी.के. श्रीवास्तव*

बुन्देलखण्ड की भूमि एवं नदियों से सम्बन्धित एक छत्रसालकालीन छन्द इस प्रकार है—

उत्तर समथल भूमि गंग जमुना सू—बहित है।
प्राची दिस कैमूर सोन, कासी सू—लसित है॥

दक्खिन रेवा विंध्याचल तन सीतल करनी।
पश्चिम में चम्बल सोहत मन हरनी।

तिनमधि राजे गिरि वन, सरिता सहित मनोहर।
कीर्तिस्थल बुन्देलन कौ बुन्देलखण्डबर॥

इस छन्द को पढ़कर लगता है कि बुन्देलखण्ड में नदियों का जाल होने के कारण यहाँ की भूमि उपजाऊ एवं कृषि पैदावार उत्तम होगी, मगर ऐसा दिखाई नहीं देता। बुन्देलखण्ड की सीमा का निर्धारण करने वाली प्रमुख नदियाँ यमुना, टौंस (सोन), नर्मदा एवं चंबल हैं। बेतवा, सिंध नदियों का कुछ भाग भी बुन्देलखण्ड में आता है। धसान, केन आदि नदियाँ भी अन्य छोटी-छोटी सहायक नदियों का पानी लेकर इन्हीं चार प्रमुख नदियों में मिल जाती हैं। नदियाँ होते हुये भी बुन्देलखण्ड में कृषि पैदावार की सबसे बड़ी समस्या यहाँ का पहाड़ी इलाका एवं पथरीली भूमि है। बुन्देलखण्ड की नदियों में बरसात को छोड़कर पानी की कमी हमेशा बनी रहती

है। नदियों के ऊँचे तट होने के कारण नहर निकालना आसान नहीं है। बांध अधिक बने नहीं, अतः पानी पूरा का पूरा बह जाता है। ढालू जमीन होने के कारण प्राकृतिक झील कोई नहीं है। केवल बाँदा जिले में सिपून गाँव में एक छोटी झील है, जिसे स्वाभाविक झील की संज्ञा दी जा सकती है। वह भी इतनी उथली है कि वर्षा के बाद उसका जल भी सूख जाता है।

किसी भी क्षेत्र की अर्थव्यवस्था का मूल आधार जल की उपलब्धता पर ही निर्भर है। बुन्देलखण्ड में वर्षा तो होती है, मगर अभियान्त्रिकीय प्रयासों द्वारा जल संरक्षण की कमी के कारण, यहाँ पानी की कमी रही है। बुन्देलखण्ड को अकाल का सामना करना पड़ता है। चित्रकूट परिक्षेत्र के पाठा क्षेत्र को ही लें, यहाँ कोल जाति बसती है। यह लोग पानी के लिये अत्यन्त परेशान रहे। महिलाओं को एक गगरी पानी भी अत्यन्त दूर से मुश्किल भरे रास्तों से लाना होता था। यहाँ यह कहावत प्रचलित है कि स्त्री के लिये पति से भी कीमती पानी है। बाँदा जिले की आदिवासी महिलायें यहाँ पहाड़ियों एवं टोरियों के मध्य स्थित भौरा ताल से बामुश्किल पानी लाती हैं। यह तालाब सदा भरा रहे इसकी कामना करती हैं। पानी भर कर लाते हुए उन्हें शंका रहती है कि कहीं पथरीले रास्तों पर ठोकर खाकर, उनकी गगरी गिर कर फूट न जावे। अतः रास्ते भर वह कहती जाती हैं—“भौरा तेरा पानी गजब कर जाये,

*प्रोफेसर, इतिहास विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)